डॉ० किरण पटेल (हिन्दी विभाग)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर।

B.A.-II दिनांक - 30.07.2020

रत्नावली का चरित्र-चित्रण

मानस का हंस

आगे —

उन्हें लगा कि वे अब अपनी सम्पत्ति नहीं रहे। आँखें नीची हो गईं।" रत्नावली के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन नागर जी ने तुलसी-रत्ना के आकर्षण प्रसंग में भी किया है —

"कंचन-सा वर्ण, चेहरे पर आत्मतेज और वाणी में आत्मविश्वास की ऐसी दीप्ति थी कि तुलसीदास की आँखें शिष्टाचार भूलकर कुछ क्षणों के लिए रत्नावली के मुख को एकटक निहारने लगीं।"

हम देखते हैं कि रत्नावली में बचपन से ही तर्क-शक्ति का प्राधान्य था। अपनी प्रखर बुद्धि के आधार पर वह

पेज - (२)

किसी भी ज्ञानी के साथ तर्क करने में नहीं हिचकिचाती थी। यद्यपि व्यवहार में वह अत्यन्त मृदु भाषी है किन्तु किसी भी बात का प्रत्युत्तर देने में वह झिझकती नहीं।

ज्योतिषी पिता की तरह वह भी एक ज्योतिष - पंडिता है। और यह सब उसके अध्ययन - अध्यवसाय से है। तुलसीदास का जन्म अभुक्त मूल नक्षत्र में हुआ था इसीलिए तुलसी के पिता आत्माराम आदि प्रायः सभी ज्योतिषी उन्हें अभागा मानते थे। किन्तु रत्ना इस मत से भिन्न मत रखती थी। उसकी गणना के अनुसार तुलसी को परम विद्वान एवं तेजस्वी घोषित होना चाहिए। तुलसी के जन्म - पत्रिका के विषय में रत्नावली की यह ज्योतिष - गणना स्वयं पंडित दीनबन्धु पाठक और तुलसीदास के लिए भी विस्मयकारक थी।

- क्रमशः